

णाय AV. 5, 14, 4. 12, 4, 52.

— प्रतिपरा zurückführen ÇAT. Br. 2, 5, 20.

— उपसंपरा zusammen wegführen zu: पितृभ्य उपसंपराणायादिमान् AV. 18, 4, 50.

— परि 1) herumsführen, — geleiten, — tragen; herbeibringen RV. 1, 95, 2. 162, 4. सो ऋधराय परिणीयते कविः 3, 2, 7. ज्योवाज्ञं परिणीयत्याज्ञौ 53, 24. स सद्यः परिणीयते 4, 9, 3. 15, 1. ज्ञीवा मृतेभ्यः परिणीयमानाम् AV. 18, 3, 3. परिमि गार्मनेषत् RV. 10, 153, 5. 163, 5. तेनैवैनमयं देवतानां पर्यणयत् brachte an die Spitze TS. 2, 3, 4, 3. ÇAT. Br. 5, 3, 2, 6. 7, 3, 2, 18. ÇĀṆKH. Br. 28, 2. KAUC. 46. 64. 80. 81. — 2) insbes. ein Paar oder eine Braut um das Feuer herumsführen (als Hochzeitscerimonie): प्रदक्षिणां तौ प्रकृतिपाणी परीणयामास स वेदपारगः MBH. 1, 7340. तौ दंपती त्रिः परिणीय वक्त्रिम् (पुत्रेधाः) KUMĀRAS. 7, 80. ऋगृह्णा यच्च ते पाणिमयिं पर्यणयं च यत् R. 2, 42, 8. Daher ein Mädchen heirathen, sich mit einem Mädchen vermählen: वरपित्वा यथान्यायं मन्त्रवत्परिणीय च MBH. 1, 6134. राजकन्या यः परिणयति PĀṆĀT. 261, 8. 10. HIT. 63, 20. 21. RĀGA-TAR. 3, 436. DAÇAK. in BENF. Chr. 201, 3. KATHĀS. 18, 80. 322. परिणिये तां गान्धर्वविधिना 220. (तेन) गुप्तं गान्धर्वविधिना परिणीता 7, 82. 10, 180. ÇĀK. 71. 63, 23. HIT. 28, 3. VET. in LA. 20, 8. — 3) herausbringen, ausführen: तेषां वृत्तं परिणयेत्सम्यग्राष्ट्रेषु तच्चैः M. 7, 122. MBH. 12, 3272. — 4) परिणीत wohl ausgeführt in der Stelle: ये चैव मो प्रशंसन्ति ये च निन्दन्ति मानवाः । सर्वान्परिणीतेन कर्मणा तोषयाम्यहम् ॥ MBH. 3, 13739. — Vgl. परिणय, णाय, णेतर्. — caus. zubringen (die Zeit): तत्र काकसंक्षणाणि तां निशो पर्यनाययन् (sic) MBH. 10, 36.

— अनुपरि ringsherum führen, — tragen: प्रदक्षिणामग्निमनुपरिणीय KAUC. 34. 35. 65.

— विपरि, partic. णीत dessen Platz mit dem eines andern vertauscht ist SHADY. Br. 3, 7. Der Comm. liest विपरीत.

— प्र 1) vorwärts geleiten, führen, fördern: अस्मान्प्र हि नेषि वस्य आ RV. 2, 1, 16. 6, 47, 7. प्राचं नो यत् प्र णयत साधुया 10, 66, 12. यस्तुवर्तं प्रणेषत् 2, 30, 3. 26, 4. यं प्रणिनायं मरुते सौभगाय 3, 8, 11. 7, 64, 3. 10, 176, 3. VS. 7, 12. 11, 8. anführen: (सेना) नीतिमता प्रणीता R. 2, 98, 31. वानरेन्द्रप्रणीतेन वलेन 6, 7, 19. साकमग्नेनोक्थानि प्रणयेत् AIT. Br. 3, 49. hinführen, richten auf: मयि सकपटं किंचित्क्वापि प्रणीतविलोचने SĀU. D. 71, 9. भगवत्क्रयायां प्रणीयमानो मुनिः BHĀG. P. 3, 13, 5. vorführen so v. a. zum Vorschein bringen, zeigen: उद्यन्नादित्यः सर्वाणि भूतानि प्रणयति AIT. Br. 3, 31. तत्तदपुः प्रणयसे सदनुग्रहाय BHĀG. P. 3, 9, 11. hinbringen: दग्धां मुक्तां पश्य उलूकपूर्णां काकप्रणीतेन कृताशनेन PĀṆĀT. III, 1. darbringen, darreichen: तस्यार्घ्यं प्रणाय BHĀTT. 3, 76. entsenden, abschicken: तेन सम्यक्प्रणीतानि शर्वालानि MBH. 6, 3796. प्रणीत = तिस H. an. 3, 275. MED. t. 124. fg. bei Seite schaffen, wegschaffen: तमः प्रणीतम् RV. 1, 117, 17. अथ कुत्याः परिक्षिणं वनवासं च कृत्स्नशः । त्रैपद्याश्च परिक्षिणं प्रणेष्यामि कृते त्वयि ॥ MBH. 6, 3453. पत्रः प्रणीतः wohl ein ausgesetzter Sohn 1, 4672. med. sich zuführen: यद्वै प्राणोनाम मात्मन्प्रणयते तत्प्राणस्य प्राणत्वम् ÇAT. Br. 12, 9, 2, 14. प्रणीत = प्रवेशित hineingeführt H. an. MED. — 2) techn. Ausdruck für das Hintragen des Feuers auf seine Oerter am Altar und des zu den Handlungen nöthigen Wassers (auch des Soṃa) RV. 1, 148, 3. 3, 6, 1. 27, 8. 4, 1, 9. प्रणीति घ-

मिर्गिनी VS. 19, 17. अथः AV. 9, 6, 4. 5. ÇAT. Br. 1, 1, 4, 12. 7, 3, 2, 4. 11, 3, 2, 8. सोमाय प्रणीयमानाय (अनुब्रूहि) 3, 6, 2, 9. AIT. Br. 1, 27, 28. 30. 7, 12. KĀTJ. ÇĀ. 5, 4, 2. 6, 2, 3. — प्रणीतश्चाप्रणीतश्च यथाभिर्देवतं मरुत् M. 9, 317. AK. 2, 7, 19. H. 826. H. an. MED. HALĀJ. 2, 260. यथा क्षाक्वनीयो ऽग्निर्गार्हपत्यात्प्रणीयते MBH. 1, 3053. 14, 635. PRAÇNOP. 4, 3. AK. 2, 7, 20. त्रिधा प्रणीतो ज्वलनो मुनिभिर्वेदपारगैः HARIV. 11863. प्रणीताः (sc. आपः) das am Morgen zum Gebrauch beim Opfer geholte Wasser ÇAT. Br. 1, 9, 2, 32. 11, 20, 1. 14, 2, 2, 50. KĀTJ. ÇĀ. 2, 2, 8. ÇĀṆKH. ÇĀ. 4, 7, 1. R. 6, 96, 5. प्रणीता f. eine Art Opferschale (यज्ञपात्रात्तर) MED. t. 124. Vgl. अग्निप्रणयन. — 3) दण्डम् den Stock führen, Strafe verhängen: यदि न प्रणयेद्गजा दण्डं दण्डोष्ठतन्द्भितः M. 7, 20, 19. 27. 31. 8, 238. MBH. 1, 2469. 3, 1045. 11317. 12, 3216. 15, 198. RAGH. ed. Calc. 1, 25. BHĀG. P. 5, 26, 16. — 4) bringen zu, versetzen in (einen Zustand): येन वशं प्रणीताः unterworfen BHĀG. P. 7, 8, 8. विधात्रा — भवान्प्रणीता दृगोचरां दशाम् 7, 2, 33. — 5) hervorbringen, bewerkstelligen, ausführen, vollbringen, vollführen: यत्प्राणेन प्राणिति येन प्राणः प्रणीयते KENOP. 8. तव नेत्रे देवहूत्यां प्रणेष्ये तत्त्वसंदिताम् BHĀG. P. 3, 21, 32. कण्ठाश्लेषोपगृहं तदपि च न चिरं यत्प्रियमभिः प्रणीतम् Spr. 376. मिथ्या प्रणीते यज्ञाङ्गे प्रज्ञानां संतपो ध्रुवः HARIV. 11103. R. 6, 96, 6. समस्तान्सपत्नान्मुप्रणीतेन विधिना विश्वास्य PĀṆĀT. 171, 13. किमयं शब्दः स्यात्स्वभावज्ञ उत परंप्राणितः PĀṆĀT. ed. GRI. 18, 10. प्रज्ञानां प्रणेष्यसि BHĀG. P. 4, 27, 29. NAIŠU. 1, 15, 19. यत्रार्थं प्रणयते दुर्बले बलवत्तरः MBH. 12, 3482. न च धर्मं प्रणीतं ते पथ्यमुक्तं विचक्षणैः R. 5, 23, 7. तस्मात्तमेव प्रणयेत्सदैव मन्त्रं प्रज्ञासंयुक्तो समर्थम् MBH. 12, 3180. 3179. दण्डनीत्यां प्रणीतायां सर्वे सिध्यन्त्युपक्रमाः anwenden 452. प्रणीत = कृत, विहित gethan, vollbracht H. an. MED. = उपसंपन्न zubereitet (von Speisen) AK. 2, 9, 45. H. 413. H. an. MED. — 6) feststellen, einsetzen, lehren; verassen: द्यूते पुराणैर्व्यवहारः प्रणीतस्तत्रात्ययो नास्ति न संप्रहारः MBH. 2, 1977. त्रिंशन्मुहूर्तं तु भवेदक्ष रात्रिश्च संख्या मुनिभिः प्रणीता 12, 8490. प्रणीतमृषिभञ्जिता धर्मं शास्त्रतमव्ययम् 13, 2542. गिरिमरुत्स्वयम् । तत्प्रणीतो ऽथ गोपानां गवां कृतोः प्रवर्त्यताम् HARIV. 3864. धर्मो मनुना प्रणीतः RAGH. 14, 67. BHĀG. P. 6, 3, 19. ÇUK. in LA. 41, 12. H. 25, Sch. भवत्प्रणीतमाचारमामनन्ति हि साधवः KUMĀRAS. 6, 31. न मत्प्रणीतं न परंप्राणितं सुतो वदत्येषः BHĀG. P. 7, 5, 28. (आयुर्वेदम्) भूयो ऽष्टधा प्रणीतवान् abfassen SUGR. 1, 1, 18. MBH. 1, 591. क्रमं प्रणाय शिस्तौ च प्रणयित्वा स गालवः 12, 13263. Schol. zu P. 2, 4, 21. Vop. Einl. शास्त्रं च यस्योशनसा प्रणीतम् PĀṆĀT. V, 76. ÇĀṆKH. zu BRU. ĀH. Up. S. 302. PRAB. 28, 2. 28, 1. MÜLLER, SL. 197. Verz. d. Oxf. H. No. 380. MADHUS. in Ind. St. 1, 18, 1. KULL. zu M. 1, 5. मनुप्रणीतले ऽस्य शास्त्रस्य ders. zu M. 1, 4. — 7) seine Zuneigung —, seine Freundschaft gegen Jmd an den Tag legen: प्रणयतु भवतो मो यदेष्टमभिमन्त्रिताः MBH. 2, 1288. प्रणयस्व यथाश्रद्धं राजन्किं कर्वाणि ते 3, 2160. प्रणयिष्यति 12, 3529. ददानि किं चापि मनःप्रणीतं प्रियातिथेस्तव wohl was das Herz lieb hat 13, 3503. — Vgl. प्रणय, णायन. णायनीय, णाय्य, णो, णेतर्, णेय. डुप्रणीत. — desid. hinführen wollen: प्र यं राये निर्नीषसि RV. 8, 92. 4. — Vgl. प्रणिनीषेय.

— अतिप्र vorüberbringen: द्वावग्नी LĀTJ. 5, 4, 12. 10, 11, 11.

— अग्निप्र herbeiführen zu: प्र णेष्यामि वस्यो अस्मान् RV. 1, 31, 18. hintragen (Feuer zum Altar): जज्वाल लोकमिथत्ये स राजा यथाधरे